

डक्लिप्टेरा पॉलीमोर्फा

[स्रोत: पी.आई.बी.](#)

हाल ही में वजिज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (DST) के तहत एक स्वायत्त संस्थान, अग्रकर अनुसंधान संस्थान (Agharkar Research Institute-ARI) के वैज्ञानिकों ने भारत के उत्तरी पश्चिमी घाटों में डक्लिप्टेरा की एक नई प्रजाति की खोज की है, जिसका नाम डक्लिप्टेरा पॉलीमोर्फा (Dicliptera Polymorpha) है।

प्रजातियों से संबंधित प्रमुख नष्कर्ष क्या हैं?

■ डक्लिप्टेरा पॉलीमोर्फा के अद्वितीय लक्षण:

- अग्निप्रतिरोधक क्षमता: यह ग्रीष्मकालीन सूखे से बच सकता है तथा घास के मैदानों में लगने वाली आग के प्रति भी अनुकूल हो सकता है।
- फरि से खलिते की प्रकृति: मानसून के बाद (नवंबर-अप्रैल) और फरि आग लगने के बाद मई-जून में खलिते है।
- रूपात्मक वशिष्टता: इसमें पुष्पों की ऐसी संरचनाएँ होती हैं जो भारतीय प्रजातियों में असामान्य हैं, लेकिन अफ्रीकी प्रजातियों में पाई जाने वाली संरचनाओं के समान होती हैं।
- कठोर परिस्थितियों के लिये अनुकूलन:
 - यह पश्चिमी घाट के खुले घास के मैदानों की ढलानों पर पनपता है।
 - काष्ठीय मूलवृत्त दूसरे पुष्पन चरण के दौरान बौने पुष्पीय अंकुर उत्पन्न करते हैं।

■ प्रजातियों के लिये खतरा:

- मानव-प्रेरित आग: हालाँकि आग से इस प्रजाति को फरि से पनपने में मदद मिल सकती है, लेकिन बहुत अधिक या खराब तरीके से नियंत्रित आग से इसके आवास को नुकसान पहुँच सकता है।
- आवास का अतिप्रयोग: अतिचारण और भूमि-उपयोग में परिवर्तन से चरागाह की जैव विविधता को खतरा है।

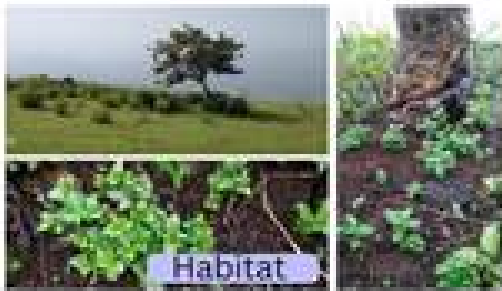
Dicliptera polymorpha Dharap, Shigwan & Datar



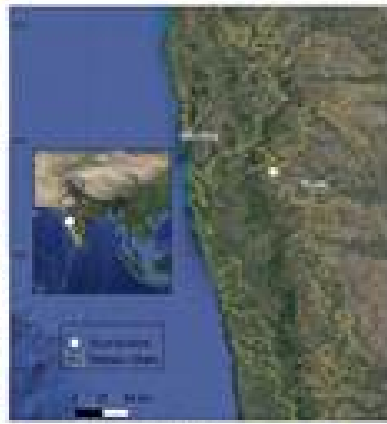
Monsoon flowering



Summer flowering



Habitat



Distribution map



Capsule



पश्चिमी घाट के बारे में कुछ प्रमुख तथ्य क्या हैं?

परिचय:

- पश्चिमी घाट, जिसे सह्याद्री पहाड़ियों के रूप में भी जाना जाता है, वनस्पतियों और जीवों के अपने समृद्ध और अद्वितीय संयोजन के लिये जाना जाता है।
- इस शृंखला को उत्तरी महाराष्ट्र में सह्याद्री, कर्नाटक और तमिलनाडु में नीलगिरी पहाड़ियाँ तथा केरल में अन्नामलाई पहाड़ियाँ और कार्डमम पहाड़ियाँ कहा जाता है।
- इसे यूनेस्को के विश्व धरोहर स्थल के रूप में मान्यता प्राप्त है।
- पश्चिमी घाट में भारत के दो बायोस्फीयर रिज़र्व, 13 राष्ट्रीय उद्यान, कई वन्यजीव अभयारण्य और कई रिज़र्व वन पाए जाते हैं।
 - इसमें नागरहोल के सदाबहार वन, कर्नाटक में बांदीपुर राष्ट्रीय उद्यान और नुगु के परणपाती वन तथा केरल व तमिलनाडु राज्यों में वायनाड और मुदुमलाई राष्ट्रीय उद्यान के आसपास के क्षेत्र शामिल थे।

वैश्विक जैव विविधता हॉटस्पॉट:

- भारत के चार मान्यता प्राप्त जैव विविधता हॉटस्पॉट में से एक, यह कई स्थानिक और अभी तक खोजी जाने वाली प्रजातियों का आवास है।

चरागाह पारस्थितिकी तंत्र:

- घास के मैदानों में अद्वितीय वनस्पतियाँ और जीव पाए जाते हैं, जिनमें से कई अग्निके अनुकूल होते हैं।
- दुर्लभ एवं संकटग्रस्त प्रजातियों के लिये आवास, पारस्थितिकी संतुलन के लिये आवश्यक।

पश्चिमी घाट के संरक्षण के प्रयास:

गाडगलि समिति (2011):

- इसे पश्चिमी घाट पारस्थितिकी विशेषज्ञ पैनल (Western Ghats Ecology Expert Panel- WGEEP) के नाम से भी जाना

जाता है।

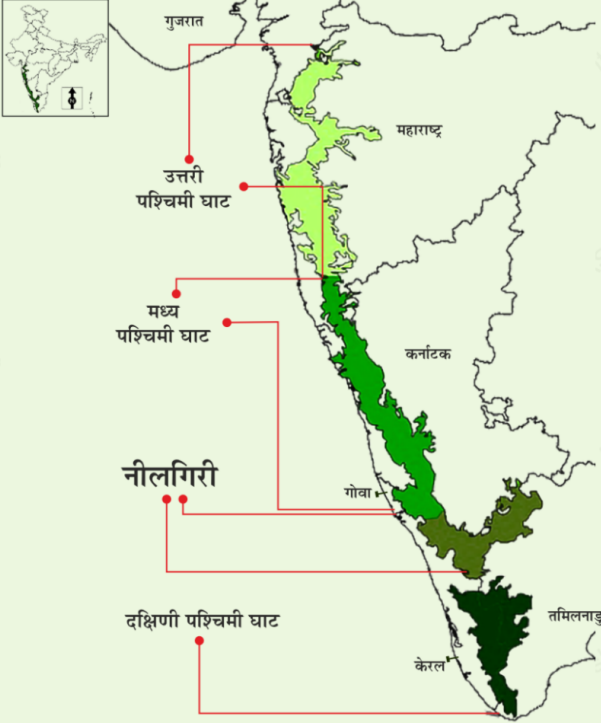
◦ समिति ने सफ़िराशि की कसमसत पशुचमी घाट को **पारसिथतिकी संवेदनशील कषेत्र (Ecological Sensitive Areas-ESA)** घोषति कयिा जाए तथा शुरेणीबद्ध कषेत्रों में केवल सीमति वकिस की अनुमति दी जाए।

■ **कसतुरीरंगन समति, 2013:** इसमें गाडगलि रपिरट के वपिरित वकिस और परयावरण संरकषण के बीच संतुलन बनाने का परयास कयिा गया।

◦ **कसतुरीरंगन समति** ने सफ़िराशि की थी कस पशुचमी घाट के कुल कषेत्रफल के बजाय **कुल कषेत्रफल का केवल 37% ESA के अंतरगत लाया जाएगा** तथा ESA में खनन, उत्खनन और रेत खनन पर पूरण परतबिंध लगाया जाना चाहयि।

पशुचमी घाट

भारत के चार जैवविविधता हॉटस्पॉट में से एक; यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल के रूप में मान्यता प्राप्त (2012)



नदियाँ (उद्गम)

- पशुचम की ओर बहने वाली: पेरियार, भरतपुड्डा, नेत्रवती, शरावती, मंडोची
- पूर्व की ओर बहने वाली: गोदावरी, कृष्णा, कावेरी, तुंगा, भद्रा, भीमा, मालप्रभा, घाटप्रभा, हेमवती, काविनी

स्थानिक प्रजातियाँ

- नीलगिरी तहर (IUCN स्थिति - EN)
- शेर घुंछ मकाक (IUCN स्थिति - EN)

महत्त्वपूर्ण संरक्षित क्षेत्र

- वायोस्फीयर रिज़र्व- अगस्त्यमाला और नीलगिरी
- राष्ट्रीय उद्यान- साइलेंट वैली, बांदीपुर, एराविकुलम, वायनाड-मुदुमलाई, नागरहोल
- बाघ अभयारण्य- कलककड़-मुंडनथुराई, पेरियार

प्रमुख दर्रें

- थाल घाट दर्रा (कसारा घाट)
- भोर घाट दर्रा
- पलक्कड़ दर्रा (पाल घाट)
- अम्बा घाट दर्रा
- नानेघाट दर्रा
- अम्बोली घाट दर्रा

महत्त्व

- जलविद्युत उत्पादन
- भारतीय मानसून मौसम पैटर्न को प्रभावित करता है
- कार्बन पृथक्करण (हर साल ~ 4 MT कार्बन को निष्प्रावी बनाना)
- जैवविविधता के 8 वैश्विक सबसे महत्त्वपूर्ण हॉटस्पॉट में से एक (प्रजातियाँ और स्थानिकता की समृद्धि के कारण)
- लोहा, मँगनीज और बॉक्साइट अयस्क, इमारती लकड़ी, काली मिर्च, इलायची, ऑयल पाम और रबर से समृद्ध
- सर्वाधिक आदिवासी आबादी (PVTGs सहित)
- महत्त्वपूर्ण पर्यटन/तीर्थस्थल

प्रमुख खतरे

- खनन, औद्योगीकरण
- वनोपज का बड़े पैमाने पर दोहन
- मानव-वन्यजीव संघर्ष, अतिक्रमण, अवैध शिकार
- पशुओं की चराई, वनों की कटाई
- बड़ी जलविद्युत परियोजनाएँ
- जलवायु परिवर्तन

प्रमुखी समितियाँ

- गाडगिल समिति (2011) (पशुचमी घाट पारिस्थितिकी विशेषज्ञ समिति)
 - » सफ़िराशि: श्रेणीबद्ध क्षेत्रों में सीमित विकास के साथ समूचे पशुचमी घाट को पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील क्षेत्र (ESA) के रूप में घोषित किया जाना चाहिये।
- कसतुरीरंगन समिति (2013)
 - » सफ़िराशि: समूचे क्षेत्र के बजाय, पशुचमी घाट के कुल क्षेत्रफल का केवल 37% ESA के तहत लाया जाए + ESA में खनन, उत्खनन और रेत खनन पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया जाए।

नाम

■ सह्याद्री- उत्तरी महाराष्ट्र; सह्य पर्वतम- केरल

पर्वत प्रकार के बारे में विविध दृष्टिकोण

- दृष्टिकोण 1: अरब सागर में भूमि के एक हिस्से के नीचे की ओर मुड़ने के कारण बनने वाले भ्रंशोत्थ पर्वत
- दृष्टिकोण 2: वास्तव में पर्वत नहीं बल्कि दक्कन के पठार के भ्रंशोत्थ कगार/किनारे

प्रमुख चट्टानें

■ बेसाल्ट, ग्रेनाइट नीस, खोंडालाइट, कायांतरित नीस, क्रिस्टलीय चूना पत्थर, लौह अयस्क

भौगोलिक विस्तार

■ सतपुड़ा (उत्तर में) से तमिलनाडु के अंत तक कन्याकुमारी (दक्षिण में)

पर्वत श्रृंखलाएँ

- नीलगिरी पर्वतमाला, शेवारॉय और तिरुमाला श्रृंखला
- सबसे ऊँची चोटी- अनामुडी (केरल)



UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न (PYQs)

??????????:

प्रश्न: हाल ही में हमारे वैज्ञानिकों ने केले के पौधे की एक नई और भिन्न जात की खोज की है जिसकी ऊँचाई लगभग 11 मीटर तक जाती है और उसके फल का गूदा नारंगी रंग का है। यह भारत के किस भाग में खोजी गई है? (2016)

- (a) अंडमान द्वीप समूह
- (b) अन्नामलाई वन
- (c) मैकल पहाड़ियाँ
- (d) पूर्वोत्तर उष्णकटिबंधीय वर्षावन

उत्तर: (a)

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/dicliptera-polymorpha>

